

३. जानता हूँ मैं

— महात्मा गांधी

परिचय

जन्म : १८६९, पोरबंदर (गुजरात)

मृत्यु : १९४८ (दिल्ली)

परिचय : गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। आप भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। पूरा देश आपको राष्ट्रपिता कहकर संबोधित करता है।

प्रमुख कृतियाँ : 'सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा), 'हिंद स्वराज्य या इंडियन होमरूल', इनके अतिरिक्त लगभग प्रत्येक दिन अनेक व्यक्तियों और समाचार पत्रों के लिए लेखन करते थे।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पाठ महात्मा गांधीजी के विचारों पर आधारित है। यहाँ ईश्वर, कर्म, सत्य, अंतरात्मा की आवाज, आशा, विश्वास, वचन बद्धता आदि के बारे में गांधीजी का चिंतन विचारणीय है। ये सभी विचार आज भी समाज के लिए प्रकाश स्तंभ के समान मार्ग बताने में सक्षम हैं।

मैं मार्ग जानता हूँ। वह सीधा और सँकरा है। वह तलवार की धार की तरह है। मुझे उसपर चलने में आनंद आता है। जब मैं उससे फिसल जाता हूँ तो रोता हूँ। ईश्वर का वचन है—“जो प्रयास करता है, वह कभी नष्ट नहीं होता।” मुझे इस वचन में पूरी आस्था है। इसलिए अपनी कमजोरी की वजह से मैं चाहे हजार बार नाकामयाब रहूँ पर मेरी आस्था कभी नहीं डिंगेगी। बल्कि यह आशा कायम रहेगी कि जिस दिन यह शरीर पूरी तरह नियंत्रण में आ जाएगा, उस दिन मुझे ईश्वर की अलौकिक आभा के दर्शन हो जाएँगे और ऐसा होगा जरूर।

मेरी आत्मा जब तक एक भी अन्याय अथवा एक भी विपत्ति की विवश साक्षी है तब तक वह संतोष का अनुभव नहीं कर सकती। लेकिन मेरे जैसे दुर्बल, भंगुर और दीन व्यक्ति के लिए हर दोष को दूर करना या जो भी दोष मैं देखता हूँ, उन सबसे स्वयं को मुक्त मानना संभव नहीं है।

मेरी अंतश्चेतना मुझे एक दिशा में ले जाती है और शरीर विपरीत दिशा की ओर जाना चाहता है। इन दोनों विरोधी दलों के कार्यों से मुक्ति पाई जा सकती है पर वह मुक्ति कई धीमे और पीड़ाप्रद चरणों से गुजरते हुए ही प्राप्य है।

मैं यह मुक्ति कर्म का यंत्रवत त्याग करके नहीं पा सकता। यह तो अनासक्त भाव से प्रबुद्ध कर्म करके ही पाई जा सकती है। इस संघर्ष में देह को निरंतर तपाना पड़ता है तब जाकर अंतश्चेतना पूरी तरह स्वतंत्र हो पाती है।

मैं मात्र एक सत्यशोधक हूँ। मेरा मानना है कि मैंने सत्य तक पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ लिया है। मैं उसे पाने का निरंतर प्रयास कर रहा हूँ लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं अभी तक अपने ध्येय में सफल नहीं हो सका हूँ। सत्य को पूर्ण रूप से पाना अपना और अपनी नियति का पूरी तरह साक्षात्कार करना अर्थात् पूर्ण हो जाना है। मुझे अपनी अपूर्णताओं का पीड़ादायक बोध है और इसी बोध में मेरी समस्त शक्ति सन्निहित है; क्योंकि यह बड़ी दुर्लभ बात है कि आदमी को अपनी सीमाओं का बोध हो जाए।

मैं इस संसार में 'परिव्याप्त अंधकार के बीच से' निकलकर आलोक तक पहुँचने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझसे अक्सर गलतियाँ हो जाती हैं या मिथ्या अनुमान लगा बैठता हूँ.. मेरा भरोसा केवल भगवान में है और मैं इनसानों का भी भरोसा इसलिए करता हूँ। यदि मुझे भगवान में भरोसा न

होता तो मैं इनसानों की तरह अपनी मानव प्रजाति से घृणा करने वाला होता ।

मैं सारी दुनिया को प्रसन्न करने के लिए भगवान से विश्वासघात नहीं करूँगा ।

मैंने अपने जीवन में जो भी उल्लेखनीय कार्य किया है, तर्कबुद्धि से प्रेरित होकर नहीं किया अपितु अपनी सहजवृत्ति, बल्कि कहूँ कि भगवान से प्रेरित होकर किया है ।

मैं आस्थावान व्यक्ति हूँ । मुझे केवल भगवान का आसरा है, मेरे लिए एक ही कदम पर्याप्त है । अगला कदम, समय आने पर भगवान स्वयं मुझे सुझा देगा ।

मेरी कोई गोपनीय विधियाँ नहीं हैं । सत्य के अलावा और कोई कूटनीति मैं नहीं जानता । अहिंसा के अलावा मेरे पास और कोई हथियार नहीं है । मैं अनजाने में कुछ समय के लिए भले ही भटक जाऊँ लेकिन सदा के लिए नहीं भटक सकता ।

मेरा जीवन एक खुली किताब रहा है । मेरे न कोई रहस्य हैं और न मैं रहस्यों को प्रश्रय देता हूँ ।

मैं पूरी तरह भला बनने के लिए संघर्षरत एक अदना-सा इनसान हूँ । मैं मन, वाणी और कर्म से पूरी तरह सच्चा और पूरी तरह अहिंसक बनने के लिए संघर्षरत हूँ । यह लक्ष्य सच्चा है, यह मैं जानता हूँ पर उसे पाने में बार-बार असफल हो जाता हूँ । मैं मानता हूँ कि इस लक्ष्य तक पहुँचना कष्टकर है पर यह कष्ट मुझे निश्चित आनंद देने वाला लगता है । इस तक पहुँचने की प्रत्येक सीढ़ी मुझे अगली सीढ़ी तक पहुँचने के लिए शक्ति तथा सामर्थ्य देती है ।

जब मैं एक ओर अपनी लघुता और अपनी सीमाओं के बारे में सोचता हूँ और दूसरी ओर मुझसे लोगों की जो अपेक्षाएँ हो गई हैं, उनकी बात सोचता हूँ तो एक क्षण के लिए तो मैं स्तब्ध रह जाता हूँ । फिर यह समझकर प्रकृतिस्थ हो जाता हूँ कि ये अपेक्षाएँ मुझसे नहीं हैं । ये सत्य और अहिंसा के दो अमूल्य गुणों के मुझमें अवतरण हैं । यह अवतरण कितना ही अपूर्ण हो पर मुझमें अपेक्षाकृत अधिक द्रष्टव्य है । इसलिए पश्चिम के अपने सहशोधकों की मुझसे जो कुछ सहायता बन पड़े, उसकी जिम्मेदारी से मुझे विमुख नहीं होना चाहिए ।

मैं अचूक मार्गदर्शक अथवा प्रेरणा प्राप्त होने का दावा नहीं करता । जहाँ तक मेरा अनुभव है, किसी भी मनुष्य के लिए अचूकता का दावा करना अनुचित है क्योंकि प्रेरणा भी उसी को मिलती है जो विरोधी तत्त्वों की क्रिया से मुक्त हो और किसी अवसर विशेष के संबंध में यह निर्णय



‘व्यक्तित्व विकास’ संबंधी किसी प्रसिद्ध वक्ता के विचार सुनिए ।

करना मुश्किल होगा कि विरोधी युग्मों से मुक्ति का दावा सही है या नहीं। इसलिए अचूकता का दावा करना बड़ा खतरनाक है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमें कोई मार्गदर्शन उपलब्ध ही नहीं है। विश्व के मनीषियों का समग्र अनुभव हमें उपलब्ध है और सदा उपलब्ध रहेगा।

इसके अलावा, मौलिक सत्य अनेक नहीं हैं बल्कि एक ही है जो सत्य स्वयं है जिसे अहिंसा भी कहा जाता है। सीमा में बँधा मनुष्य सत्य और प्रेम के संपूर्ण स्वरूप को, जो अनंत है, कभी नहीं पहचान पाएगा। लेकिन जितना हमारे मार्गदर्शन के लिए आवश्यक है उतना तो हम जानते ही हैं। हम उसपर आचरण करते समय त्रुटि कर सकते हैं और कभी-कभी वह भयंकर भी हो सकती है। लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपने को नियंत्रित कर सकता है और नियंत्रण की इस शक्ति में जिस प्रकार त्रुटि करने की शक्ति समाहित है, उसी प्रकार त्रुटि का पता चलने पर उसका सुधार करने की शक्ति भी है।

मैं दिव्यदृष्टा नहीं हूँ। मैं संत होने के दावे से भी इनकार करता हूँ। मैं तो पार्थिव शरीरधारी हूँ – मैं भी आपकी तरह अनेक दुर्बलताओं का शिकार हो सकता हूँ। लेकिन मैंने दुनिया देखी है। मैं आँखें खोलकर जिया हूँ। मनुष्य को जिन-जिन अग्निपरीक्षाओं से होकर गुजरना पड़ सकता है, उनमें से अधिकांश से मैं गुजरा हूँ।

मेरी अंतरात्मा की आवाज मुझसे कहती है – “तुम्हें सारी दुनिया के विरोध में खड़ा होना है, भले ही तुम अकेले खड़े हो, दुनिया तुम्हें आग्नेय दृष्टि से देखे पर तुम्हें उनसे आँख मिलाकर खड़े रहना है। डरो मत। अपनी अंतरात्मा की आवाज का भरोसा करो।”

पराजय मुझे हतोत्साहित नहीं कर सकती। यह मुझे केवल सुधार सकती है। मैं जानता हूँ कि ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करेगा। सत्य मानवीय बुद्धिमत्ता से श्रेष्ठतर है।

मैंने कभी अपने आशावाद का त्याग नहीं किया है। प्रत्यक्षतः घोर विपत्ति के कालों में भी मेरे अंदर आशा की प्रखर ज्योति जलती रही है। मैं स्वयं आशा को नहीं मार सकता। मैं आशा के औचित्य का प्रत्यक्ष प्रदर्शन नहीं कर सकता पर मुझमें पराजय की भावना नहीं है।

यह सही है कि लोगों ने मुझे प्रायः निराश किया है। बहुतों ने मुझे धोखा दिया है और बहुतों ने अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया है, लेकिन मुझे उनके साथ काम करने का कोई पछतावा नहीं है। कारण कि मैं जिस तरह सहयोग करना जानता हूँ, उसी तरह असहयोग करना भी जानता हूँ। दुनिया में काम करने का सबसे व्यावहारिक और गरिमामय तरीका यही है कि जब तक किसी व्यक्ति के बारे में निश्चित रूप से कोई विरोधी साक्ष्य

संभाषणीय

महात्मा गांधी के जयंती समारोह में भाषण देने हेतु गुट चर्चा में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

लेखनीय

‘देश की उन्नति में युवाओं का योगदान’, विषय पर अपने विचार लिखिए।

सामने न आए, उसकी बात का भरोसा किया जाए ।

मुझे भरोसा करने के सद्धर्म में विश्वास है । भरोसा करने से भरोसा मिलता है । संदेह दुर्गन्धमय है और इससे सिर्फ सड़न पैदा होती है । जिसने भरोसा किया है, वह दुनिया में आज तक हारा नहीं है ।

वचन भंग मेरी आत्मा को झकझोर देता है, विशेष कर तब जबकि वचन भंग करने वाले से मेरा कोई संबंध रहा है । सत्तर वर्ष की अवस्था में मेरे जीवन का कोई बीमा मूल्य शेष नहीं है, इसलिए यदि किसी पवित्र और गंभीर वचन का विधिवत पालन कराने के लिए मुझे अपने जीवन की आहुति भी देनी पड़े तो इसके लिए मुझे सहर्ष तत्पर रहना चाहिए ।

जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब कुछ चीजों के लिए हमें बाह्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती । हमारे अंदर से एक हलकी-सी आवाज हमें बताती है-“तुम सही रास्ते पर हो, दाएँ-बाएँ मुड़ने की जरूरत नहीं है, सीधे और सँकरे रास्ते पर आगे बढ़ते जाओ ।”

तुम्हारे जीवन में ऐसे क्षण आएँगे जब तुम्हें कदम उठाना होगा-चाहे तुम अपने घनिष्ठ-से-घनिष्ठ मित्रों को भी अपना साथ देने के लिए सहमत न कर सको । जब कर्तव्यविमूढ़ हो जाओ तो सदैव ‘अंतःकरण की आवाज’ को ही अपना अंतिम निर्णायक मानो ।

जिस क्षण मैं अंतःकरण की छोटी-सी आवाज को अवरुद्ध कर दूँगा, मेरी उपयोगिता ही समाप्त हो जाएगी ।

(‘महात्मा गांधीजी के विचार’ से संकलित)

— o —



स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन के प्रेरक प्रसंग पढ़कर कक्षा में सुनाइए ।

शब्द संसार

सँकरा वि.पुं.(दे.) = तंग, संकीर्ण

अलौकिक वि.(सं.) = असाधारण, अद्भुत, विरल

भंगुर वि.(सं.) = अधिक दिन न टिकने वाला

अंतश्चेतना स्त्री.सं.(सं.) = आत्मज्ञान

अनासक्त वि.(सं.) = निर्लिप्त, जो आसक्त न हो

सन्निहित वि.(सं.) = साथ या पास रखा हुआ

द्रष्टव्य वि.(सं.) = दिखाई पड़ने वाला

आग्नेय वि.(सं.) = क्रोधपूर्ण

हतोत्साहित वि.(सं.) = जिसका उत्साह भंग हुआ हो

औचित्य सं.पुं.(सं.) = उचित होने की अवस्था

मुहावरे

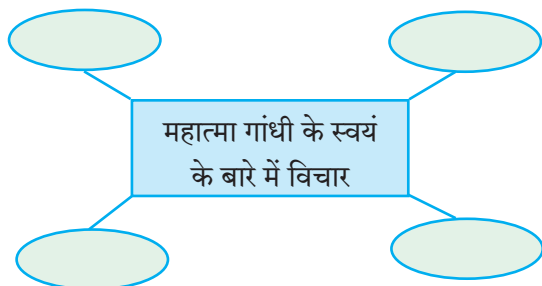
आँख मिलाकर खड़े रहना = सामना करना

कर्तव्यविमूढ़ हो जाना = असमंजस की स्थिति, दुविधा

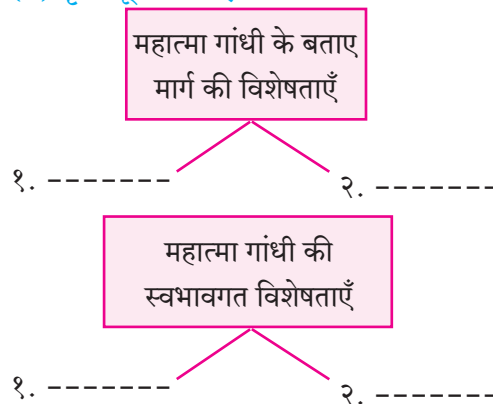
स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :



(२) कृति पूर्ण कीजिए :



(३) उचित शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. उस दिन मुझे ईश्वर की अद्भुत/अलौकिक आभा के दर्शन हो जाएँगे ।
२. सत्य के अलावा और कोई राजनीति/कूटनीति मैं नहीं जानता ।
३. मैं आस्थावान/अनास्थावान व्यक्ति हूँ ।
४. मैं मात्र एक सत्यशोधक/ सत्यप्रेमी हूँ ।

(४) उत्तर लिखिए :

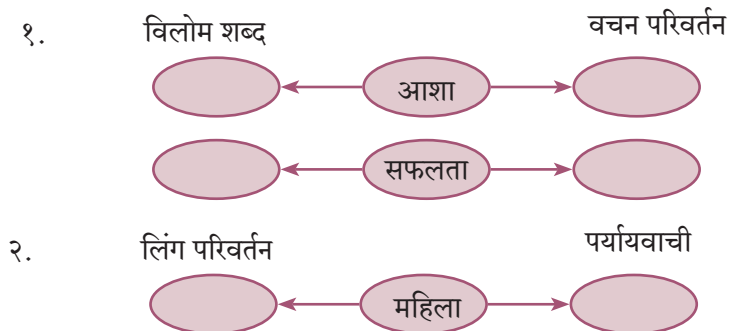
१. महात्मा गांधी का इनपर भरोसा है

१) _____
२) _____

२. महात्मा गांधी की अंतरात्मा की बातें

१) _____
२) _____

(५) सूचना के अनुसार लिखिए :



(६) 'देश की उन्नति में युवाओं का योगदान' विषय पर अपने विचारों की मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कीजिए ।



'गांधीजी एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व', विषय पर अपना मत लिखिए ।

(१) निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए :

[राह तकना, झेंप जाना, दंग रह जाना, दिल धड़कना, टकटकी बाँधकर देखना, उड़ जाना, पसीना-पसीना हो जाना]

१. चाँदनी रात में ताजमहल की सुंदरता एक टक देखने का मजा कुछ और ही है ।

वाक्य = -----

२. रात में अचानक टेलीफोन की घंटी बजी तो वृद्ध पिता जी घबरा गए ।

वाक्य = -----

३. विदेश में रहने वाले बच्चों के माता-पिता उनके लौटने का इंतजार करते हैं ।

वाक्य = -----

४. कल ही उमेश ने वेतन पाया और आज सारे रुपये गायब हुए ।

वाक्य = -----

५. रात में अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया तो माँ बहुत घबरा गई ।

वाक्य = -----

६. बच्चे सैर करने गए थे । वहाँ का नजारा देखकर आश्चर्य चकित हो गए ।

वाक्य = -----

(२) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर कॉपी में उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. भौचक्का रह जाना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

३. पत्थर की लकीर होना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

२. अभिभूत होना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

४. मुँह खिलना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

५. टाँग अड़ाना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

६. आँख मिलाकर खड़े रहना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

७. उड़न छू होना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

८. सिहर उठना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

९. चक्कर काटना : अर्थ = -----, वाक्य = -----

१०. चुप्पी में बाँध जाना : अर्थ = -----, वाक्य = -----



अपने प्रिय लेखक/कवि को पत्र लिखकर उनकी किसी रचना के बारे में अपना मत व्यक्त कीजिए ।

